आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2359 • उदयपुर, बुधवार 9 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

कोरोना की दूसरी लहर को काबू करने में मॉडल बन रहे अहमदाबाद और सूरत

गुजरात के शहर कोरोना की भयावह दूसरी लहर को सिर्फ एक महीने में तेजी से नियंत्रित कर देश में मॉडल के रूप में उभरे है। अहमदाबाद की पॉजिटिविटी रेट 1 प्रतिशत तो सूरत की 1 प्रतिशत से भी कम है।

दोनों शहर 5000 मामलों से घटाकर 250 मामले तक ले आए। यहां सफलता का राज स्थानीय पालिका प्रशासन, कंपनिया और संपन्न समाजों की एकजुटता रही है। सूरत में ही विभिन्न समाजों की मदद से दर्जनों अत्याधुनिक कम्युनिटी कोविड केयर सेंटर बने, जिसमें हजारों लोगों को बिना अस्पताल गए ही कोविड केयर मिली।

उद्यमियों का मिला साथ : प्रदेश के बड़े शहरों में हैल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर दूसरे शहरों के मुकाबले बेहतर है। आइओसी, ओएनजीसी, आर्सेलर मित्तल,

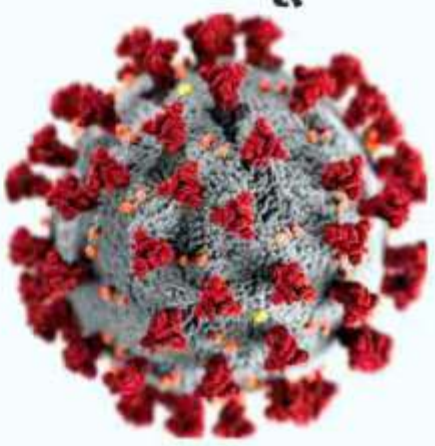

निप्पॉन स्टील, अडानी समेत कई बड़ी कंपनियों ने प्रशासन की मदद की कोविड सेंटर भी बनाए।

प्रयोग जो सफल रहे

- धनवंतरी और संजीवनी रथों से घर–घर दवाई व उपचार।
- अहमदाबाद में भी 2800 मेडिकल मोबाइल वैन दौड़ाई।
- अहमदाबाद में 240 नर्सिंग होम का अधिग्रहण।
- एक्टिव और पैसिव सर्विलांस व साइंटिफिक फोरकास्ट मॉडल।
- एक्यूट रेस्पिरेटरी इलनेस वाले मरीजों का आकड़ा जुटाने वाला

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

50 हजार से ज्यादा का मददगार बना नारायण सेवा

कोरोना रेड अलर्ट लॉकडाउन के दौरान नारायण सेवा संस्थान हजारों, बेरोजगार, दुःखी बीमार और संक्रमितजनों को उनकी आवश्यकता के मुताबिक उनके घर तक निःशुल्क सेवाएं पहुंचा रहा है। पिछले माह की 19 तारीख से अब तक निःशुल्क भोजन, दवाई, ऑक्सीजन, एम्बुलेंस और सेनेटाइजेशन की सेवाएं शहर में हजारों लोगों तक पहुँचाई जा चुकी है।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' की प्रेरणा से संक्रमितों के घर 50044 भोजन पैकेट, 243 ऑक्सीजन सिलेंडर, 2386 कोरोना दवाई किट, 134 हाइड्रोलिक बेड, बेरोजगार और निर्धन परिवारों को राशन किट जिनमें आटा, चावल, दाल, तेल, शक्कर और मसाले आदि है, वितरित किए गए है। इन सेवा प्रकल्पों के सुचारू संचालन के लिए संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल के निर्देशन में 80 सदस्य टीम का गठन किया गया है। उन्होंने कहा कि संस्थान के हेल्पलाइन नंबर पर रोजाना 100 से अधिक कॉल्स प्राप्त हो रही है जिन्हें तत्काल सेवाएं मुहैया की जा रही है। संस्थान का मकसद ही यही है कि इस कठिन घड़ी में ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंदों तक उक्त सेवाएं पहुचांई जाए।

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुचायी।

संस्थान जरूरतमंदो के घर–घर भोजन, दवाई और ऑक्सीजन सिलेंडर की निःशुल्क सेवाएं दे रहा है। जिससे हजारों लोग रोज लाभान्वित हो रहे हैं।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 243 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर – घर भोजन' सेवा

अब तक घर-घर नि:शुल्क 50,044 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 2386 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 286 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

134 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

कोरोना प्रभावित 30,145 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिष्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मेरे पिता जी 5 दिन पहले कोरोना संक्रमित निकले। उन्हेंघर पर रखकर ईलाज शुरू किया लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा। हमारी फिक्र बढ़ने लगी। हॉस्पीटल में ऑक्सीजन बेड के लिए प्रयास किया पर मिला नहीं। मदद के लिए नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। तो उन्होंने ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करा दिया। 2–3 दिन ऑक्सीजन पर रहने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। अब पिता जी पूर्ण कुशल है। विपदा की घड़ी में संस्थान की मदद के लिए हम सदैव कर्तज्ञ रहेंगे।

– मोहन मीणा, डबोक

सम्पादकीय

प्रगति एक सतत् प्रक्रिया है। प्रगतिशील व्यक्ति ही समय के साथ सामंजस्य बैठा सकता है। यों प्रगति का अर्थ वर्तमान में संकुचित होकर केवल आर्थिक क्षेत्र का मूल्यांकन ही होता जा रहा है। वस्तुतः प्रगति तो सर्वांगीणहै। प्रगति चहुँमुखी हो तभी वह संतुलित कहलाती है। आज आर्थिक प्रगति पर तो सबका पूरा–पूरा ध्यान रहता है किन्तु जो प्रगति मानव का मूल्य स्थापित करती है उस तरफ भी ध्यान अपेक्षित होता है।

प्रगति को वैचारिकता, मानवीयता तथा पावनता से भी जोड़ा जाना आवश्यक है। मूल्यांकन के समय इन क्षेत्रों को भी जोड़ना होगा तभी सर्वांगीण प्रगति होगी। आज वैश्विक स्वास्थ्य संकट है तो इन कसौटियों की प्रासंगिकता भी बढ़ गई है। विश्व में कोई भी देश मानवीय सुरक्षा के उपाय खोजे तो उसे सबके लिये उपयोगी बनाने की भी पहल हो। यो मानव में परहित भाव जन्मजात होता है किन्तु परिस्थिति के कारण वह क्षीण हो सकता है। मानव सेवा का भाव पुनः पूर्ण रूप से उदित हो यह भी प्रगति का एक प्रकार ही है। यों सभी इस दिशा में प्रयासरत हैं पर समवेत प्रयास से ही प्रगति दृष्टिगत होगी।

कुछ काव्यमय

मैं मेरा मेरे लिये
यह है घातक सोच।
इसमें कहां समानता,
यह प्रगति में पोच।।
मैं सबका मेरे सभी,
यही है सोच उदार।
तभी संतुलित बन सके,
प्रगतिशील सुविचार।।

- वख्तीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन

–लेखक श्री प्रशान्त अग्रवाल नारायण सेवा संस्थान अध्यक्ष

कोविड–19 एक तूफान की तरह आया है और इसके कारण अचानक जो बदलाव हुए हैं, उन्होंने पूरी दुनिया को थोड़ा और आधुनिक बना दिया है। सिर्फ फार्मेसी ही नहीं, तकनीक, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों के वैश्विक ढ़ांचे में भी बदलाव हुए हैं। इसमें सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि हम किस तरह इन बदलावों के साथ चल रहे हैं। पिछले कई वर्षों से स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को ऑनलाइन प्लेटफार्म पर लाने के जबरदस्त प्रयास चल रहे हैं और कोविड–19 के दुनिया भर में बढ़ते मामलों ने सभी अर्थव्यवस्थाओं को अपने स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए मजबूर किया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ग्लोबल स्ट्रेटेजी ऑन डिजिटल हेल्थ 2020–2024 रिपोर्ट बताती है सब जगह, सब आयु वर्ग और सब के लिए स्वस्थ जीवन और जीवनशैली को प्रोत्साहित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। 2019 में जारी यह रिपोर्ट कहती है कि सभी देशों में स्वास्थ्य सुविधाओं को आगे बढ़ाने और सहायता करने तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल को प्राप्त करने में डिजिटल हेल्थ सहायक रहेगी।

यह स्वास्थ्य को बेहतर करने तथा बीमारियों को रोकने में भी सहायक रहेगी। इसी को देखते हुए रिपोर्ट में यह सुझाव दिया गया था कि इसकी संभावनाओं का पूरा इस्तेमाल करने के लिए राष्ट्रीय या क्षेत्रीय डिजिटल स्वास्थ्य प्रयास एक मजबूत रणनीति के तहत किये जाने चाहिए। इस रणनीति में वित्तीय, संगठनात्मक, मानवीय और तकनीकी संसाधनों का समावेश होना चाहिए।इस रणनीति पर विचार और काम करते हुए कई देशों ने डिजिटल स्वास्थ्य रणनीतियों को तेजी से लागू करना शुरू किया है। इसी तरह की एक रणनीति भारत सरकार ने विकसित की है जिसे राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन कहा गया है।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा मजबूत डाटाबेस तैयार करना है जिसमें समावेशी स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को शामिल किया जाएगा। इसके जरिये ऐसे पहचान पत्र तैयार किए जाएंगे जिनसे देश के प्रत्येक व्यक्ति को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं मिलती रहें। हालांकि स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के गम्भीर प्रयास किए गए हैं लेकिन दिव्यांगों को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने में आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

दिव्यांगों के सामाजिक समावेशन के विचार को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन दिव्यांगों को इस तरह सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा कि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवाएं मांग सकें और प्राप्त कर सकें। मिशन को इस तरह बनाया गया है कि यह सभी के लिए बिना भेदभाव का एक ही तरह का प्लेटफार्म उपलब्ध कराएगा और स्वास्थ्य पहचान पत्रों के जरिये सामाजिक समावेशन करेगा। इससे हर व्यक्ति और दिव्यांग का अलग ई–रेकॉर्ड तैयार हो सकेगा। अब बड़े संस्थानों ने अपनी बाहे खोल दी हैं और दिव्यांगों को अपने यहां काम दे रहे हैं क्योंकि अब ऐसे कई कौशल आधारित कार्यक्रम उपलब्ध हैं जो दिव्यांगों को काम के लिए तैयार कर देते हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके पास अपनी स्वास्थ्य रिपोर्ट रहेगी जिससे ये संस्थान अपने केडिडेट चुनते समय अपनी जरूरत के हिसाब से निर्णय कर सकेंगे। नारायण सेवा संस्थान वर्षों से इस तरह के सफल प्रयास कर रहा है जिससे इन दिव्यांगों को उसी तरह का वातावरण मिल सके जो मुख्य धारा के कैडिडेट्स को मिलता है। नारायण सेवा संस्थान इन दिव्यांगों को कौशल विकास का प्रशिक्षण देने से लेकर एक बेहतर जीवनशैली का अवसर देने तक का प्रयास कर रहा है। यहां इनकी क्षमताओं को बढ़ा कर उन्हें जीवन के हर क्षेत्र की चुनोतियाँ का सामना करने के लिए तैयार किया जा रहा है। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन में इन दिव्यांगों के ई–रेकॉर्ड होंगे जिससे सरकार को इन्हें दिए जाने वाले उपचार के बारे में भविष्य की योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी और ये लोग मुख्य धारा के वातावरण के लिए तैयार हो सकेंगे। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन के लागू होने के बाद दिव्यांगों के लिए कई सकारात्मक पहल होती दिखेगी। इनमें किफायती जैविक उत्पाद और उपचार शामिल होंगे। इसके जरिए उन नई तकनीकों को भी बढावा मिलेगा जो दिव्यांगों के उपचार के लिए जरूरी सामान देश में ही तैयार हो सकेगा।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन पूरे स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को साथ लाकर दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा ताकि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवा मांग और प्राप्त कर सकें। यह मिशन नए उभरते हुए उद्यमियों और स्टार्टअप्स या घरेलू व्यवसायों को दिव्यांगों के लिए उपयोगी किफायती और आसानी से उपलब्ध उत्पाद व स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के अवसर निश्चित रूप से प्रदान करेगा। नारायण सेवा संस्थान सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करता है और इसके उददेश्य का पूरी तरह समर्थन करता है, क्योंकि इससे ना सिर्फ पूरे स्वास्थ्य ढांचे को बदलने में मदद मिलेगी, बल्कि देश में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में पारदर्शिता भी आएगी।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

राजमल जी को सभी लोग श्रद्धा से भाईसा कहते थे। उनके चेहरे की उदासी देख कर कैलाश का मन द्रवित हो उठा, वह झट से बोल उठा– मैं चलूं भाईसा आपके साथ? 6 दिन पोस्ट ऑफिस से छुट्टी ले लूंगा। कुछ ही देर पहले स्वयं के आंखों के ईलाज के लिये नई नई नौकरी का बहाना करने वाला सेवा कार्य के लिये छुट्टी लेने किस तरह तत्पर हो गया यह आश्चर्यजनक था।

कैलाश की बात से भाईसा बहुत प्रसन्न हो गये और उसे अपने साथ ले जाने को तत्पर हो उठे। अगले दिन कैलाश अपने जीवन में पहली बार किसी कार में बैठा। भाईसा के पास मारूति की छोटी कार थी। उसी में बैठकर वे शिविर की तरफ चल पड़े।

भाईसा की नाकौड़ा भैरव जी में बहुत आस्था थी। वहां दर्शन कर खाने पर बैठे तो उन्होंने अपनी थाली से अमरस की कटोरी निकाल कर बाहर कर दी। कैलाश ने बरबस ही पूछ लिया–आपको अमरस पसन्द नहीं?

भाईसा बोले– मुझे आमरस ही सबसे ज्यादा पसन्द है, फिर आपने आमरस की कटोरी बाहर क्यूं निकाली? कैलाश ने पूछा– जवाब मिला– जो बहुत अच्छा लगे उसकी ज्यादा आदत नहीं डालनी चाहिये इसलिये साल भर के लिये आमरस छोड़ रखा है, कैलाश को एक बात और सीखने को मिल गई।

अंश- 30